हिंदी अनुवादक: पादरी विजय पाल सिंह

मसीह में एकता

“हे भाइयो, मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से विनती करता हूँ कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।” (1 कुरिन्थियों 1:10)

कुरिन्थियों का अभिवादन करने और उनकी आत्मिक उन्नति के लिए उनकी प्रशंसा करने के बाद, पौलुस उस कलीसिया को प्रभावित करने वाली पहली समस्या पर चर्चा करता है: एकता की कमी।

कुरिन्थियों की पत्रियों तथा पौलुस द्वारा लिखी गई अन्य पत्रियों में हम देखते हैं कि वह इस समस्या के समाधान के लिए निर्देश देता है, जो आज की कलीसियाओं को भी प्रभावित कर सकती है।

शुरू से ही एक बात स्पष्ट है: कलीसिया में एकता मानवीय प्रयासों से प्राप्त नहीं की जा सकती। केवल यीशु पर ध्यान केन्द्रित करने के द्वारा ही हम सच्ची एकता प्राप्त कर सकते हैं।

- फूट का कारण बनने वाली समस्याएँ:
  - विभाजन और झगड़े
- एकता बनाए रखने के उपाय:
  - यीशु में एकता
  - बुद्धि और परिपक्वता
  - सेवा और नम्रता
  - अगुओं के लिए सम्मान

फूट का कारण बनने वाली समस्याएँ

विभाजन और झगड़े

“हे भाइयो, मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से विनती करता हूँ कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।” (1 कुरिन्थियों 1:10)

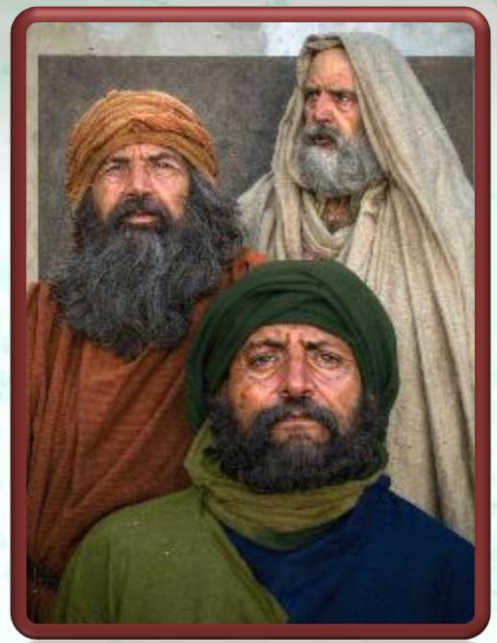

कुरिन्थुस की कलीसिया में कौन-कौन से विभाजन थे? (1 कुरिन्थियों 1:12)

कुरिन्थुस में विभिन्न अगुए आए थे, और प्रत्येक विश्वासी का अपना पसंदीदा प्रचारक था (पौलुस, अपुल्लोस, पतरस आदि)। यह स्थिति इतनी बढ़ गई कि उनके बीच विवाद उत्पन्न होने लगे (1 कुरिन्थियों 1:11)।

वे यह समझ नहीं पाए कि वे सब एक ही संदेश का प्रचार कर रहे थे, और उन्होंने महत्वहीन बातों पर ध्यान केन्द्रित करना शुरू कर दिया (1 कुरिन्थियों 3:5-8)।

धीरे-धीरे कलीसिया का जीवन प्रभावित होने लगा (1 कुरिन्थियों 3:3)। एकता की कमी ने प्रभु भोज के आयोजन को भी विकृत कर दिया (1 कुरिन्थियों 11:33), और वे एक-दूसरे के विरुद्ध न्यायालय में मुकदमे तक ले जाने लगे (1 कुरिन्थियों 6:1)।

एकता बनाए रखने के उपाय

यीशु में एकता

"परमेश्वर सच्चा है, जिसने तुम को अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है।" (1 कुरिन्थियों 1:9)

"क्या मसीह बँट गया है? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? या क्या तुमने पौलुस के नाम से बपतिस्मा लिया?" (1 कुरिन्थियों 1:13)। इन प्रश्नों के द्वारा पौलुस उन्हें सोचने के लिए प्रेरित करना चाहता है।

एकता केवल तब प्राप्त की जा सकती है जब हम यीशु को अपना प्रभु मानें। एकता किसी भाई या बहन के विचारों या मतों का अनुसरण करने से, या छोटे-छोटे बंद समूह बनाने से प्राप्त नहीं होती।

परन्तु यीशु में एकता का अर्थ एकरूपता नहीं है। इसका यह अर्थ नहीं कि हम सब हर विषय में एक जैसा सोचें, या हम सब एक ही प्रकार से कार्य करें।

मतभेदों की छोटी-छोटी बातें और प्रत्येक व्यक्ति के अलग-अलग उपहार, जब मसीह पर केन्द्रित होते हैं, तो वे फूट उत्पन्न करने के बजाय एकता उत्पन्न करते हैं (1 कुरिन्थियों 12:12-13, 25, 27)।

कलीसिया में सच्ची एकता केवल तब प्राप्त होती है जब हम स्वयं के लिए मरते हैं और यीशु के लिए जीते हैं।

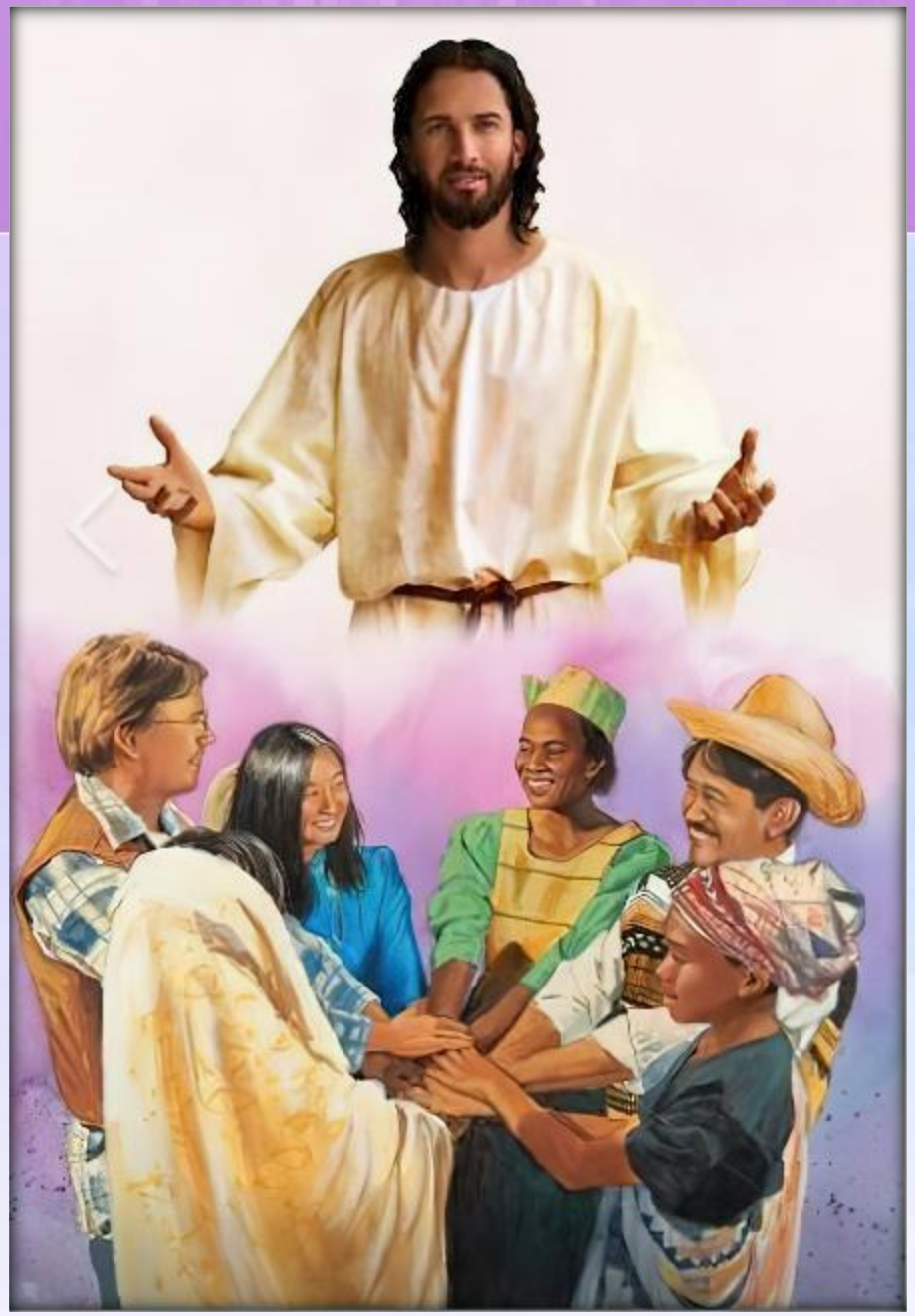

बुद्धि और परिपक्वता

"हे भाइयो, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका जैसे आत्मिक लोगों से, परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में बालक हैं।" (1 कुरिन्थियों 3:1)

पौलुस अपरिपक्व मसीहियों को "मसीह में बालक" और "शारीरिक" कहता है (1 कुरिन्थियों 3:1)। इस प्रकार के मसीही यीशु की अपेक्षा मनुष्यों पर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हैं।

जब कुछ अगुओं को दूसरों की अपेक्षा अनुचित रूप से अधिक महत्व दिया जाता है, तब ऐसे समूह बन जाते हैं जो कलीसिया में विभाजन उत्पन्न करते हैं। यह अपरिपक्वता का परिणाम है। इसलिए पौलुस हमें मसीह में परिपक्वता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है (1 कुरिन्थियों 2:6)।

अपरिपक्व		परिपक्व	
	वे बच्चों के समान होते हैं (1 कुरिन्थियों 3:1)		वे वयस्क होते हैं (1 कुरिन्थियों 14:20)
	वे दूध पर निर्भर रहते हैं (1 कुरिन्थियों 3:2)	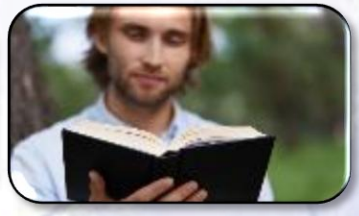	वे ठोस भोजन ग्रहण करते हैं (इब्रानियों 5:14)
	वे शारीरिक होते हैं (1 कुरिन्थियों 3:3)		वे आत्मिक होते हैं (1 कुरिन्थियों 2:13)
	वे दूसरों की राय से प्रभावित हो जाते हैं (1 कुरिन्थियों 3:4)		उनमें आत्मिक समझ और परख होती है (1 कुरिन्थियों 2:14)

सेवा और नम्रता

"मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझे।" (1 कुरिन्थियों 4:1)

जिस प्रकार आज लोग राजनीतिक, दार्शनिक, धार्मिक और अन्य विचारधाराओं के कारण विभाजित हैं, उसी प्रकार पहली शताब्दी में भी लोग विभाजित थे। हम इस प्रकार की सोच को कलीसिया में प्रवेश करने और विभाजन उत्पन्न करने से कैसे रोक सकते हैं?

अगुओं का दृष्टिकोण इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कलीसिया के अगुओं को अपनी भूमिका के विषय में स्पष्ट होना चाहिए कि वे केवल भण्डारी हैं। वे कलीसिया के स्वामी नहीं हैं; वे केवल मसीह की ओर से उसका प्रबंधन करते हैं।

कलीसिया का वास्तविक अगुवा यीशु है; अन्य सभी लोग "मसीह के सेवक" के रूप में उसकी अगुवाई करते हैं (1 कुरिन्थियों 4:1)।

जो सेवक प्रबंधन करता है, उसे अपने स्वामी के समान व्यवहार करना चाहिए: सदैव नम्रता के साथ स्वयं को दूसरों की सेवा के लिए समर्पित करने के लिए तैयार रहना चाहिए (फिलिप्पियों 2:3-8)।

यदि हर व्यक्ति — केवल अगुए ही नहीं, बल्कि कलीसिया का प्रत्येक सदस्य — इस प्रकार व्यवहार करे, तो कलीसिया में कितनी महान एकता होगी!

अगुओं के लिए सम्मान

"फिर यहाँ भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि वह विश्वासयोग्य हो।" (1 कुरिन्थियों 4:2)

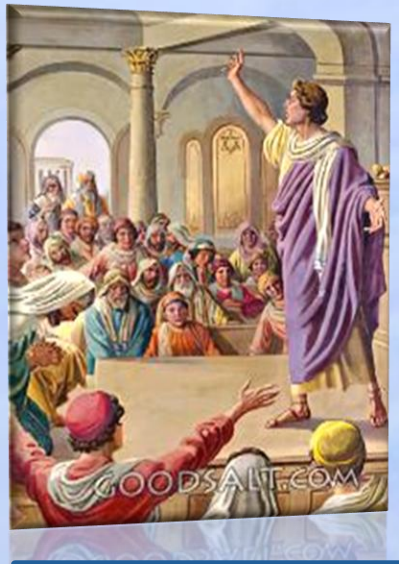

अगुओं के इर्द-गिर्द प्रतिस्पर्धा और गुटबाज़ी का अस्तित्व यह नहीं दर्शाता कि हमें उन्हें अस्वीकार कर देना चाहिए। इसके विपरीत, पौलुस ने अपुल्लोस की सेवकाई और कुरिन्थुस में उसके कार्य का समर्थन और बचाव किया (1 कुरिन्थियों 3:5-6; 4:6; 16:12)।

जब अगुए विश्वासयोग्य रूप से कार्य करते हैं, तो वे सम्मान के योग्य होते हैं (1 कुरिन्थियों 4:2; 1 तीमुथियुस 5:17)। परन्तु जब उन्हें वह सम्मान नहीं भी मिलता, तब भी वे विश्वासयोग्य बने रहते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि उनका न्याय मनुष्य नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर करेगा (1 कुरिन्थियों 4:3-4)।

फ्रैंक और वाल्टर बॉन्ड स्पेन के पहले प्रचारक थे। वाल्टर ने 1914 में जाएन में अपने विश्वास के कारण अपने प्राण दे दिए।

मसीही अगुए यीशु के पदचिन्हों पर चलते हैं, अपने भाइयों और बहनों के लिए दुःख सहने के लिए तैयार रहते हैं, और यदि आवश्यकता पड़े तो अपनी सेवकाई के लिए प्राण देने तक को भी तैयार रहते हैं (1 कुरिन्थियों 4:11-13; 2 कुरिन्थियों 11:23-28)।

न तो अगुओं को और न ही सदस्यों को आपस में लड़ने या विवाद करने के लिए बुलाया गया है, बल्कि उन्हें यीशु की स्तुति करने और क्रूस के संदेश का प्रचार करने में एकजुट होने के लिए बुलाया गया है।

“कलीसिया में पूर्ण एकता को केवल मसीह के समान सहनशीलता की आत्मा ही सिद्ध कर सकती है। शैतान फूट डाल सकता है; केवल मसीह ही असहमत तत्वों को एकता में ला सकता है.... जब आप, कलीसिया के व्यक्तिगत कार्यकर्ता के रूप में, परमेश्वर से सर्वोच्च प्रेम करेंगे और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करेंगे, तब एकता में आने के लिए किसी विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं होगी; मसीह में एकता होगी, शिकायतें सुनने वाले कान बंद हो जाएंगे, और कोई भी अपने पड़ोसी की निंदा को ग्रहण नहीं करेगा। कलीसिया के सदस्य प्रेम और एकता को बनाए रखेंगे और एक बड़े परिवार के समान होंगे। तब हम संसार के सामने ऐसे प्रमाण प्रस्तुत करेंगे जो यह गवाही देंगे कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में भेजा है।”

ई जी व्हाइट (मसीह को प्रतिबिंबित करना, 5 जुलाई)